

**THE INSTITUTE FOR
ADVANCED STUDIES
OF WORLD RELIGIONS**

FILM—STRIP NO.
MBB—1971— 97-98-41

**BUDDHIST SANSKRIT
MANUSCRIPTS**

MBB-1979-97-98
1. Film strip number

37
2. Source

(1) HIRANYAMĀLĀNĀMADĀŚAKRIYĀVIDHI
3. Title

(2) DVADĀŚĀGNIKRIYĀKĀRYĀVIDHI

4. Additional titles, shortened forms of title, etc.

N.S. 1050 + 880 = A.D. 1930
5. Year in which MS was copied
(Nepali Samvat and Christian Era)

MAHABHARATA
6. Name of Scribe

NEPALI PAPER
7. Material (Palm leaf, etc.)

NEPALI
8. Script

30 cm. x 15 cm.
9. Size

13
10. Lines to a page

47
11. Number of leaves in complete
work

1, 46
12. Missing-leaves

13. Author and Date of composition
(if given)

12 Acts
14. Number of Chapters

15. Remarks

The research work on ritual fire sacrifice

Jan 5, 1973
Date photographed

प्रतिष्ठायादिने नाना प्रकारेण (अथलपेविलिखाय चोपादिपं समासताभय संसा जयागथप्रका नश्लं कथं
 खवर्तमानश्लं ज्ञानधर्मदण नामयक निमित्तं खवर्तं पृथ्वदयक हनुनं ॥ ० ॥ अथाशानि संसाधसीमकाप
 नयनसुख ज्ञाननामापनयानां चडाक नभमवच वृतादण समावर्तु पाणिग्रहस्थग्निकर्मणि ॥ वतदण क्रिया
 यागनिर्दे (ह) नापि कथथा ॥ ० ॥ अथाशाना वक्रधर्मसेव मामायादवियागर्त (अ) धनयाय वीजा नापनयाय सी
 मकापुलाय चालात्पाख नादजापर्यकं ज्ञानकर्मजायलपु नामकर्म नामक्य उपनयनछिनक जनक के
 ध (अ) धन चडाक नभवासंखाय कर्तुं दक्षसखन वडादण हि कुर्य समावर्तु वतमाक थवथा यसेइ
 विय पाणिग्रहविवाहा कथादानादि प्रतिष्ठा कर्म क्रिया हादण ग्नियक उपेदण क्रियानाम क्रिया सं
 पूर्ण उदण प्रतिष्ठा काने दण मप्रक नभध तेशला ॥ ० ॥ अथुर्वे (अ) नां वक्रकृत्रिय वेधनां छुडानां
 यथाक्रमे षु भूपीत नक कुरुवर्तु हयसुवृद्धिमानां आनिक प्रष्टिक चववधक हि चानकर्मक यथाक्रम
 धविहयं सर्वे कर्मसुवृद्धिमानां वक्रकृत्रिय वेधनां प्रजागां छुडानां नका कुरुक कथा ॥ छान्ती पुरोव
 छान्ति चान्ति विधिवत्कर्तुं ते सुगुणाने ॥ अथुर्वे (अ) नां वक्रकृत्रिय वेधनां प्रजागां छुडानां नका कुरुक कथा ॥ छान्ती पुरोव
 के वीपुष्य वस्त्रा नजाति नक सयाल नसत्कर्तुं हि ॥ तीर्थां ग्राहि ॥ की जगन्नाथसुयुक्ते ॥ अथ नगम ज
 स कयुक्ता सु (अ) ते ॥ ती वेंदव कर्तुं मि कुर्या गुदादो प्राक सयारु ससप्तसुयाम्बु नैति कमानि सुक

॥ २ ॥
 ५३
 ५२

[illegible]

नमः ॥ त्राहिलिकर्मवद स्वरावं वडाफाडसूर्यवडाकड ॥ दवापूरु कर्मसिहाप्रयत्नं गुणुह ॥ १८ नमः
 यागमहत्वासेचिस्तेवनिः स्वरावस्वरावं वडादोवाधुनका नृधि नृपा ॥ नाना नत्तगर्त पुष्या म्बुमिभु
 नर्घदत्ता मंगलस्तुता ॥ १८ ॥ पञ्च हाताका नसूत्रय ॥ थेव ॥ चक्र न्यासे ॥ सूत्रपाते विद्वत् ॥ पटम् ॥
 ज्ञाचार्यवदसिस्वरावस्वरावं वडा ॥ गतमधुलस्वरावं ॥ समस्तकार्यधाययातनिमित्तनं वडादिले
 कपालकादिने ॥ समस्तदवं साकिसि नृपयाडाडा ॥ विविस्मं पञ्च पात्रनादिनहास्यं ॥ यं कलपं नृस्यगीतपु
 काखनकं ॥ दक्षिणा दक्षविस्मं ॥ व्यापाजिमा लक्ष कर्मवद गथागतस्वडाव ॥ हाथपूजादक्षिणाविस्मं ॥ लाहा
 निचन्द्रसूर्यस्वरावस्वरावं ॥ यं कमा जाख ॥ प्रतिमाया लक्ष ॥ मालकसाजनसिद्धयकं ॥ हाहाकनगं स्रुधि
 नयागयुक्ति ॥ दद्याद ॥ चित्रविचित्रचायायाड नानास्वराववकं ॥ आदिन साका नल्यकं ॥ नाना नाना
 संकाज नाना नाना नाना ॥ गवयमानद्वयकं ॥ पुष्यागं ॥ मृदादिमिभुकल ॥ १८ ॥ दकेन ॥ नर्घदत्ता
 नर्घयाडाव पूजास्तुतियाडाडा पतिरुजनसाजन ॥ थुननुहुद्विरुला ॥ ॥ रजोदोवापूरु कर्मधर्मग
 ॥ पञ्च हाताका नधी ॥ जामृत्तन ॥ लखिडा रुं वद सचिविधु ॥ हावागवडा मा ॥ मूलतय दूरु मालं पुस्तकस्य
 ॥ ॥ रजोदोवापूरु ॥ पुस्तककायवद स्वरावं ॥ वेजावनस्वरावलस्वनी ॥ रुं काजवद ॥ अजाव
 स्वरावं ॥ अकूनमाता सर्वधर्मा वागवद स्वरावं ॥ अमितावस्वरावं ॥ लेखक ॥ ॥ कायवद ॥ पुस्त

पञ्चपहो न पूजा स्मृति ॥ स्मृतिथानि संस्थापनविधिः ॥ तत्राकनीकडाहिपूर्वमधुलसं नक हाका न वि
 दहिं गहल ॥ त्रिकायवीज न समन्वीज कं समाधुलया विपक्षधिया कनं ॥ आवकधस आक निद्रनां काठा
 सवन्द मधुलस नक हाका न भयमहा न तलय लिभन पं सरुयाड वड सत्वया आलयन वीज पतन रुडा स
 य मनावा काकुल गधल पंड विकरुला विदहिं गहल मनाह ने उस्माह मानरुलं त्रिकायवीज न भय म
 नसावाचा कर्मभा उनाचका व धावल पाव वीजा आपनया यरुला ॥ पी० वा गह वा चे वय नु नय
 थतथा यमगही जय नुं चया गने व सुबुद्धिमान् ॥ रुडा दोवा लिखे नय नुं ॥ सुपत्रं सकर्हि कं ठकाय वी
 ज म ॥ हि वीजा क नं यम नुं बुद्धि ॥ रुडा पत्रं सकर्हि दल पत्रं वाया व वीजा क न वां य ॥ उं आ ॥ काद
 वया वीजा क न सकसके कुमानि सुत्र कर्हि न कुमानि सुत्रियन ॥ गह वा पी० वा पतिरुडाल स पुनक
 मवनाद वताया पिछु साहाल स इथन ॥ यथा हि सर्व संबुहा स्मृतिग सं प्रतिस्मिता ॥ माया द व्या
 यथा कृत्वा गह निरुड हा क मो ॥ यथा हि म्वनष्ट समरु बुद्धया आधु य नाहि ॥ माया द विया गह
 स स्मृतिग रुवन सवसल पं चां ग्व ॥ म्वष्ट माया द विया यान सवहन पं चां ग्व वड सत्वया वीज वा मिथ
 याड वाड रुला ॥ अत्र स्मृत्त म नं नाथ रुता पुण्या दिकानि मान् ॥ रुहा नाम नुकं याय वा धिचिद्रु प्रवृ
 हय ॥ अत्र स्मृत्त यम नाथ वड सत्व पुत्रय स्मामि याड वड लं वीज रुलं आलय पुथ प न म ॥

॥४॥

यो जालयपुष्पमिष्टपञ्चगव्यं गुरुं गुरुस्नानसमायादवीनपञ्चगव्यं प्रतिपालयाद्विष्णोर्वाधिचिदुध
 यवीजकललपुष्पानीनासिद्धस्य यो गव्यं वलसं जाचार्यस्य नवदसत्वं थमलवलपं समस्तमकुवीर्यपति
 सत्त्ववर्दीमामकुलं मामकुलं व्यापानि प्रतिमाप्रतिद्वयादनं नीनपुष्पिद्वलं समन्वाहनकुमां वहाज्ज
 यादिकसंस्थिता वदसत्वाहमाचार्यदवताकल्पयाम्हा ॥ नाचार्यनकायवदवं नीचन वाग्वदकर्मिता
 कचिद्वदकर्मिता थवहा नीनइव्याकलावलपंसमस्तदवं थवहा नीनहालपं एकलालि एकलालि
 नपं थमवदसत्त्वानपं प्रतिष्ठायाद्वादवदाकं गच संखाकवातावनपं थवमावातावनपं इला ॥
 शिष्यानामनुकर्मार्थं सत्त्वार्थप्रतिहेतुना वीजकलं महाहने प्रतिष्ठांकुर्तुमर्हथ ॥ शिष्याकुलसो
 सत्त्वसमस्तप्रतिपालहेतुन थवकचानहानवीजपुमानकललपं पलहथ ॥ प्रतिष्ठायायहेतुनं रव ॥
 प्रतिप्रतिपाद्यप्रतिप्रयदवताहदसृज्ज्मोक्तनपूर्वचन्द्रमानं स्ववीजनस्त्रीपसजो कृष्णहता ॥ पञ्चध्व
 आपजितायायलत ॥ थुनदवपदना शिष्यपदना कुम्भपनीपातिनं सम्यर्हयायनिमिदुनं
 आचार्ययाथडाहदयसवन्दुमधुलस सत्यमचान वीजाकूननादिनं कललपयकावदवसाकोन
 प्रतिमामूर्त्तिम इविचकं वधलपं वाधिचिदुहानयलयादख ॥ आदोवध्वनिपं चैववज्जोक्ता
 गदकजो कानाकनमकुधवीजमाकर्षयाम्हा आदोवध्वनं चैववदपाठगदकजो कानाकन

मनुष्यवीजस्य वधनस्य गोप्यादो वल्लि ॥ न च वुवङ्क्ता न तदकनो न का न कनमकुधवीजकनायधसुतमे यो व
रु ॥ न च ववङ्क्ता वधयवङ्क्ता न दकनो हा कौकनमकुधवीजपवङ्क्ता यद्वधः मायया ॥ ॥ पुं वङ्क्ता वङ्क्ता वी
जमाययज ॥ पुं वङ्क्ता वङ्क्ता वीजमधुलप्रवङ्क्ता यद्वधः ॥ पुं वङ्क्ता वङ्क्ता वीजमधुलवधयवङ्क्ता वङ्क्ता वङ्क्ता वीजमधु
लसंकाययज ॥ पुं वङ्क्ता वङ्क्ता वीजमधुलमाकर्षयज ॥ धय ॥ अनवसु विमृदादि महुमोम नकुञ्जुकादि
विजया वीजया नकया नक मर्कया मर्क मोसया मोस विरुया विरु मृगया मृग हा नी नहा जायल पू हृ
नं मधुलमाकर्षयज ॥ हा नी नहा जायल पू हृ ॥ वङ्क्ता वङ्क्ता वीजमधुलप्रवङ्क्ता यद्वधः ॥ पुं वङ्क्ता वङ्क्ता वी
पलदधुया सुकाय ॥ थथलाल वीज वङ्क्ता वङ्क्ता धय ॥ थवङ्क्ता नी नमख वङ्क्ता वङ्क्ता धय ॥ हा नी नमख वीज
मधुलपेववङ्क्ता वङ्क्ता वङ्क्ता धय मायादविद्या गर्हसवङ्क्ता सवङ्क्ता वीज इदिकरुते ॥ ॥ समक कर्तुं
त्रिसमाधिका वनान विधयमत हृदया लिजापकं ॥ हा नाक नैधुर्ह इठ लाका निष्ठा सवाङ्क्ता वङ्क्ता वलिपु
यिना ॥ ॥ त्रिसमाधिद ग्लियाया आदिया गभ ना नमसमाधि मधुल नागागिना मसमाधि कर्म नागागिना
मसमाधि ॥ थ न ठि माधि ॥ ग्लिया ॥ थ न लावल पं लावनायाय विधिविधानयाय ॥ अनुकर्म न हृदयम
कुजापयाय ॥ हा नाक नमदप वलिदान वलिपुतायाय रुता ॥ ॥ अननेव प्रका नैधुर्ह वङ्क्ता वङ्क्ता
न पङ्क्ता पङ्क्ता न पूजा वङ्क्ता न वङ्क्ता सर्वदा वङ्क्ता ॥ आदो वल्लि धिपेदलादिनीयदिनीयस्वने वङ्क्ता वङ्क्ता नृनीय व

ॐ का जा न नि या ज य ता नि न म रु ध मं सा ध पू ष्य पू षा प्र क त्वा य ता सर्व तु पू षा उ च्य क्त पूर्व ॥ क क म न च ॥
ॐ आ व ड पू षा है ॥ ॐ आ व ड ध प ड ॥ ॐ आ व ड दी प ड ॥ ॐ आ व ड ग ॥ ॐ आ व ड ने व ड ॥ ॐ आ व ड
पू षा ध य ॥ ॐ का ज ना द नृ प प न म ध्व ज या मूर्ति खंडा व काल य रु या व म म न मा उ थ न पं क्त ध य व ड
पू षा स वृ ति रु य मू रू व स्ना न ॐ आ व ड ध य ड ॥ ध य प न म ध्व ज या प न मा क न ना ह न हा व स्वा म वि नृ प न म
धु प या य ॥ ॐ आ व ड ध य ड ॥ ध य प न म ध्व ज या प न म स्व ज या हान ग्रा ति नृ प ध य ॥ ॐ व ड ग ॥ ध य जा न मा
मा च ना जा ग र्ध ध य ॥ ॐ आ व ड ने व ध य महा हा ना मृ त स्वा द रोग ना अ न ध य ॥ ॐ प ॥ प हा न पू षा
ध य ॥ ॐ व ड स व स म द म नृ पाल य व ड स त्व न ना प वि रु द्वा भ र व सु गो धा म र व स पा धा म र
व अ न न का म र व स र्वे मि हि म प्र य क्त सर्व क म्प स च म चि ह ॥ थ यं रु नृ है ह ह ह ह ॥ ॐ ग व न स र्व त्थ
ग न व ड मा म मृ क्त व डी र व म हा स म य स त्व ना ॥ ॐ नि हा ना क न ॥ ॐ का ज मूर्ति रु लं व ड स
त्व या ॥ व ड स त्व क्त न क अ प म य नृ प द्या प्र यु त्वं स म रु हान या धू वा अ क्त पू ह ड वि रो धि प ति अ
रु पा न ग मी ना ज ॥ ॐ नि मि रु नं स म रु क्त ॥ ॐ रु च ड म धि स या मि नं थ व न वि षा क त्वं ॥ ॐ न
हृ द य रु द या क थ रु ल स ना धा ध य स ना क या क थ रु ल स रु रु मा न रु न क थ रु न अ नृ न का ध
य ज य नी न रु न रु न पं आ न द या ड नी न या क थ रु ल स र्वे मि हि ध य रु न क वि य प्र ण न रु य मा ल

जनकर्मसमयम् सधिन सख्ययादय जनकसमृक्ति आश्रययाडावरव कैंकानपनममूर्ति हहहह ॥
प्यगुडहकाजहले नालिनिर्मोक्षचक्रनेथहाम्प हदयधर्मचक्रनेथहाम्प क॥४॥ संलागचक्रनेथहाम्प धिन
समहासुखचक्रनेथहाम्प गलिथनस थंहा क॥५॥ आनीगपथचनलपंमनुस्वासवहलपंचाग्व होधाय
गर्भगहासवाग्वनिमिहनेख रगवनधाय लेध्यास्य समयस्य हानस्य जसमधिय नृपणार्थपुछानस्य
यत्नंरवतिष्ठतिश्रुति॥३॥ नृध्यायध्यायन ॥४॥ हानास्यद सकादि ओलाग्व हडाकडा अधिपति
ध्यायनसम्यन्धाय॥ सर्वरथागनधाय नातिसवहलपु वंजाचन हदयस वसनपु म्काय॥ क॥६॥
सवहलपु म्मिगत सिजसवहलपु वंजसववज्जधाय अरुघपदधायामाममृद्धधाय यथाकृमकाति
नैऋतिपाकनदहति कृमकाजधर॥५॥ मनउद्युथंस अपमिहपुमिहारवति वडीरवधाय अकय
वसुयाकर्व महासमयधाय गलीनविद्याया पुकाडकनले सिद्धिपकस प्रतिष्ठित अनूज नभी क
पुमिहित्वाथधिग्ववज्जसत्भन॥६॥ शियाडाखलावन आचार्यनवीजानापनयाडाशना॥ ० ॥ स्वाक
गकादिगमथयावलि सकल्पनकादिनमनुमालया समाधुलयासलाकपालिध चक्रपुकादिहनिक्क
नभा॥ ॥ स्वाक गनुधाय धासु सहाया आधधाय॥७॥ क उकादका धुनुवशाक दशला थनेवसपु
आयावलिपन्तवधाय वलि कलसिंहाया॥ वायुमधुलपक पराकापेकपा नधाय॥८॥ नसाकलेख हि

॥५॥

[illegible]

यखवक्रासद्यातनेववस्मास पिङ्गलाभय ऊवक्रासद्यातनेववस्मास ॥ थवामभ सचाड सपुमावायुभय ॥ थव
पुलेनेववस्मासवायुभय ॥ ० ॥ दद्यानादिपञ्च पराका सपुमापञ्च प्रदीप वलिकाल ॥ थवरावने वलिमा
धनयात्राव उँकात्रासुरवेसर्वधर्मा ॥ मायनृत्य नलात्र उँका इँदु हस्त्रा ॥ थवमकुपेदपाव दवास्त्रजाला
कपाल्यातं वलिग ॥ थपेजपावहजा ॥ ० ॥ दवास्त्रजालवकुजस सिहाकाकासपुर्णकटपूटनाच गन्ध
र्वयकाग्रहज्ञानयश्च थकचित्त्र मोनिवसक्तिदिया ॥ थववलिपूजा समस्तदेवयाग अस्त्रेयाग ना
गयाग सिद्धिलाकयाग गजउद्यान अयियाग गन्धर्वयाग यक्रयाग ग्रहयाग अन्नकषादुहपिसव
सलपंचानसमस्तयाग ॥ ॥ न्यस्येकज्ञान पृथिवितलहं कतास्तलिविद्वयामितगु सपुत्रराजैः सहस्र
समवेष्टु ॥ थवहं हायाकुम्भनृगुहार्थ ॥ ॥ ऊवपाठ कृपादापुष्टृथिवीसदिचकेऊजमाननहला हाथ
ऊवदपं थदवाधुनेसमस्त कृष्णायस्वो देवदेवी देवपुत्रसमस्तस्ये इँड प्रका अश्रयमालख ऊव
अनृग्रहपञ्चा अश्रयमालख ॥ ० ॥ यमनृपृष्ठ निवसक्तिरुगा यन दनयवस्त्रजालथचाथचादया
स्तनविमलुलचनगजपुसर्वपृचयवसक्ति ॥ ॥ यगानपुसमनृपर्वतयाचासवसलपंचाग्वस
मस्तदेवास्त्रजयातं देवलाकया उद्यानयननाना मः ॥ जपानिजागकादिने समस्तवस्तुवहलपंचा
इँडुमवनस वसलपंचानसमस्तयाग देवसमस्तया जालयमनाहज थायसचाग्वसमस्तयाग

यथाद्याल उदयनश्च मत्वं वलपं जा वसमसं. आकाशमज्ञां ग्रहनकु. समसं दवास्त्रयात् नगन
मसमसु वसजपं चाग्रयात् ॥ सनिसवीम्वसंगमसु जलालय चाकृताधिवासा वापीमदा गधुचचत्
यसु कपसु कपसु महानदीसु ॥ दहधया नानाकलाय अन्नक नेदिहाडवान यगमस अमयात् चो जचोड
चाविपाखर्गधयसपाकृपिकृदवालया ॥ विहाजयेसा वसथा समसु मथयुष्मालासु चक्रु जायां य
गृहतावलि गृहवसन्ति नथाम् सवीथिसु चचचजसु ॥ वहिनिवाहन चेष जंगवसलपं चाग्रथयम मधु
पं देल उजान मथथनि काले थगदवयाथया ॥ थचक्रु कपसु महापथसु सिंहसु कृका धुधिना
सुयच वसन्ति धा नात्सु महागवीसु ॥ नृका तमिमा इमजान चानि वनरपसि वसलपं चाड थयसमस
वनं पर्वटं च धन खन पाख कामादा ॥ रथयुष्माला भुपं वलि पुष्यविधिं चरुक्का
गृहकु गुहकु पीवकु चदं वृदं च कर्मसु लंशयकु ॥ थगदवा स्त्रयाथय समसं भूपका दिने प
पहानविधिपर्यंतं रुकितावयाड निरूपयाडा रुना कासं विद्यायमाल ॥ वृद्धा वृद्धी सहदव सं
धुधु मंच गृहकु वलि विधिषा ॥ अग्नयमान कृतिरु पतिष्म नापपति वायुध नाधिषा ॥ सदां व
रुधनलपं वृद्धा जाजालं सहितं लोकपालसं कासं विद्यारुन वलिकाग वसु अग्निदव यम
जाकस वृद्धा वायु कुवन् थुनि संशला ॥ वृद्धा नरनाधिपतिश्च दवा सउर्ध्व चार्कपिकाम

महेश्वर दवा समता कुविय च नाग ध नाध नाग च ग (समता) ॥ १ ॥ नलं समस्त तया नागां समस्त धवन य च
दुस्य सुभावं अध पृथिवी दवता नागयासि कवन बाह्व अधुन ॥ २ ॥ नलं कासं विद्या रुना यति सुनि कनिव
दयकु स्वका स्वका ॥ ३ ॥ वदुष्टा गृह्णतु नाथ मच्च नाम मना सप्र बुद्धा नैः स्वजनैः समता ॥ पठिक २
आ ॥ ग ॥ ५ ॥ दिगपालपतिं सति १ पप्र २ पतिवान काय मी मना पुजन ॥ ३ ॥ सहितं नरुला पृथादि
पूजायाऽशुलं दानपतिं जमानया मना हजया ईस्व जनसि योया कार्यं सुरुतयाऽपुम नश्यमा ल
॥ ४ ॥ वलिगथा स्वाकृतकु सचानखे ॥ विपठयेत् वलिनिकुपया डाइना ॥ ॥ ५ ॥ निरुती यधीम
भापन यन क्रिया ॥ ॥ ६ ॥ कर्क दुमील हिजिहानि पुष्य नागे नापूर्य ह मम क्षिता मुक्षि खादि होखा ल
आकृ सुस्तुलनी गिल गये पुष्य की नाम्बुतिः सपनि पूर्ण सदर्प पायं ॥ ॥ ७ ॥ पशु नाग ॥ ८ ॥ नील रुज
वदान पुष्य नाग कर्कत न जाड रु पुन मूट ॥ ९ ॥ नव नव न संख सतसं गायकृ ॥ १० ॥ वयं नम
हाम कस्तुनि कर्पुन श्रीख ॥ ११ ॥ नीले कंकम ॥ १२ ॥ यासुग भसहितने स्त्रान ईस्व लेख धृतं सम्पूर्ण
॥ १३ ॥ कर्पपायुथ पनायाड ॥ ॥ १४ ॥ आदो व ॥ १५ ॥ धिधा चैव सर्व सुथ गत सुग ॥ १६ ॥ पादार्थं कुपद ॥ १७ ॥ प्रणि
क स्वाहाति मनुकां ॥ १८ ॥ कर्पपाग धिस्तानं च कर्पा ॥ १९ ॥ सर्वं कर्म ॥ २० ॥ आदो पशु वाक नं च विद्या कक
रुद नैः ॥ २१ ॥ आदो विद्या ककद नैः का नम नु प्रा कृ ॥ २२ ॥ होख साधि ॥ २३ ॥ नंद यं सर्व कर्म सुवृद्धि मान ॥

[illegible]

ॐ पराकजादिने नय ॥ जम्बलकृष्णवस्तुस्नानमाला नय ॥ ॥ चित्तं सुचिह्नं गितं कं सुविशालं मं ॥ व्यसृप
नावृग्युग्मङ्गु मगन्ति नय ॥ उच्चैः ॥ कृष्णकृष्णवस्तुस्नानमाला नय ॥ ॥ क
लकाया प्रमाथ समस्तं चङ्गु ताहा वमिखा कलकाया प्रमाथ कलका चङ्गु कसंघ प्रमाथ वाधि
चिरुधाय सनृज नानादकघट ॥ ॥ अथ कृष्णवस्तुस्नानमाला नय ॥ ॥ क
नाधि ॥ गयानि गमय पयादधिमृगु सर्पि सिहिमह वरुहिका गिनिके धि काश्च ॥ ॥ वल गमसि पिल
गमि इमि नमि उनमि थडागापङ्क पल्लवधाय थडागाया खालापङ्क वकलधाय ॥ भायु रुतिवृ छा इ
रुतिवृ निकलकिनि दाकलकिनि अपेनादिगस्नान थडागापङ्क यधियय ॥ ॥ गमयुग्म मयकी
नदधिमर्पिकृष्णदकं ॥ निर्दिष्टं पङ्क गव्यकु पवित्रं काय धनं ॥ थगपङ्क गव्यनठानि नेपवित्रयाय
मृगु नु नीलवर्ष्वाया कृष्णया गमये रुवता पयश्च गावुवर्ष्वाया थगाया गृह्ण दधिश्च ॥ वाइसाया चा
हाकसाया सस्वि झाइसाया इइ भायु साया धनि सियुसाया धन ॥ ॥ कथिलाका दृते गमयुग्म मयकी
निपङ्क लिशाला वसर्ववर्ष्वा निकपिलाया विष्णुयतथा थगडागावर्ष्वा मदयुगला विष्णुयततिड मि
युसाया डागां काय रुजा ॥ ॥ गमयुग्म पल्लवधाय थगपङ्क गव्यनठानि नेपवित्रयाय
पल्लानि चाला धम्यक पल्लवधाय थगपङ्क गव्यनठानि नेपवित्रयाय ॥ ॥

॥२॥

[illegible]

कलहायावस्तु थवथवचिकवस्तुवर्षदकं चास्य स्नानवदिकाथापनयायगुणउरुना ॥ कलहावस्तुआदि
 ने अधिष्ठानक्रियाविधिमातृकयाडावपूजाआदिने ॥ ॥ मिश्रभासाभुमयकाजनव्यतिष्ठान इवाप्रवाजक
 तक्रवैक्याविलिया विम्वसकाभुनमयादियुसक्तिने अनिर्याकं तकिं सगभिततेनशाने ॥ ॥ काड
 गयापञ्चगव्यनेकलहासदकाय मिहलवस्तुथरुल डाहावस्तुथरुल थवस्तुसथडावकटकीस्नानसहि
 यानसाचकनतंसपय निर्जसडासधिनेसपनयाय ॥ प्रतिमाआदिनेइला ॥ ॥ जेभकेवाचदिनकोरुम
 पायसस्थ सपिष्टवेल्कलविलपेनमर्गयष्ट ॥ गन्धमसनचसगन्धविष्ठासच ॥ ॥ कृष्णाम्नाकनिन
 मववलाकृष्टे ॥ ॥ हालहायाथवथववस्तुयाथ लपनदयथापनायात उडुमपात्रहितके साजन
 पापात्र लेनादिने थपात्रमे ॥ निदिनीया अस्महास्ननियाववल्कलनां डासधिनियावस्तुवर्षपात्रमग
 पञ्चगन्ध पञ्चगव्य पञ्चामृत नसाकचकनआदिनेथने कलहादडानशकास्पेतयइला ॥ ॥ जलप्रसा
 निकजविद्रितपुष्टकानां जादर्भमलगतप्रतिविम्बचूपे मांगल्यकाकलितगीतमृखीलिनय स्नानेक
 मनविज्ञयादिघटेप्रकृत्यात ॥ जलप्रदानि जलवाडवायापुस्तकआदिने पतिरुडाडआदिने गच्छास
 पआदिने थदवदकंस्नानकलहानलयमदा डावनकसकनरासदिचकंन प्रतिमायाकपाखनदय
 कंन हाजी नहास्नानयाडाहालपेस्नानयाय ॥ मंगलगन्धआदिने थवथवसमदाचकं पठणावविज्ञ

[illegible]

कायवक्त्रादिस्तु नृपकीर्तिः कृत्वा कनकदण्डविम्बहृदि श्रुतिप्राप्तनसा गुलाकः श्रीमाकजायकनिपुर्णवन्दुः ॥ १ ॥
 आर्द्रकिं जैर्यै मे स्केसं ॥ श्रीश्रुतकृष्णगा श्रीसम्बन्धुलं ॥ धाकाजकुसुमाख्यातं नञाजहन्तकथन ॥ मीर
 नत्वनगायावृष्य दृष्टत्वनशी मत ॥ धाकाजवीर्यशूलं नकाजहन्तं धननगामीनधपूशूलं वृका
 न ॥ वृष्यदृष्ट उरुमपजमसखशीकाज ॥ कायवक्त्रायवनावन कृत्वा कथाय मीसंनगुनियार्क
 सडैकाज ॥ वाग्बद्धमिगारककष्टसन्ना ॥ विडुवङ्गनकाएनगठसङ्गं ॥ मिखासङ्किगिगर्तकिं ॥
 इमपुटसवङ्गपाक्षिर्गं ॥ झाससखगर्तस्के ॥ मसगगधगंङ्गर्गं ॥ नाकिमखगर्तस्के ॥ गृध्रससमक
 डसं ॥ धनैमकुनं वङ्गनेथायथायसथिसंङ्गं ॥ ॥ सव्यमकजाहवसूर्यहृदि यामठकोनाइवचडह
 यि ॥ सचिन्मसोवर्द्धसनाकयादिनृपाङ्गनाटर्गमृखाकुसुम ॥ ॥ थनेधलकलि साखल नृङ्गनम
 थनपंथापानीनवकाय ॥ हाथप्रजायाहाव विय ॥ जवमिगठ मकाजधसूर्यसय ॥ खवमिग
 ठकाजधवन्दुमासय ॥ लंछलाकनवाय यितालमगदवकन वङ्गनेथिय ॥ ॥ अहामपट
 नवत्सअपनिर्गिनेसुव ॥ धाजाकेवैद्यनाउस्तुयथा लाकस्पतेमिने ॥ १ ॥ वङ्ग २ ॥ समकवङ्ग
 ॥ धनैस्वाहा ॥ अङ्गनगमकु ॥ ॥ दिव्यवङ्गयङ्ग स्वाहा ॥ छालाकयामकु ॥ १ ॥ धर्मवङ्गयङ्ग
 स्वाहा स्वाहा ॥ इमकनयामकु ॥ १ ॥ प्रसवङ्गयङ्ग ॥ मगयामकु ॥ १ ॥ वङ्गवङ्गयङ्ग स्वाहा ॥ वङ्ग

मनु॥ अग्निहोत्रविधिः॥ ० ॥ नमो भगवते विनिक्षययुक्ते कांडाद्युक्तस्मान्नितयुक्तमस्ते॥ अथ द
दयचेत इत्यक्षजया दद्याच्चपीताम्वलकचूर्णकादि॥ खालासद्यलवा लेखवापियाकहृथं कायकायध
यकं कायाव वलगनह नसथ इ दाह नपश ना इत्यक्षजहायकं॥ हाचापीतवस्तु दाह नपाव॥ ॥ पुं
जा सर्वतथागतमधुप्रासनस्वाहा॥ पुं काजादिप जमाक जमूर्ति जा आदित्त॥ तथागतयाजाहा॥ मधु
घत इत्यक्षमृग प्रासनधायक कथं ईकटस्वाहा॥ अयगर्तविंइमकायकृत॥ ॥ पुं सर्वतथागतदेवता
चिन्तामृगजस्वाहा इत्यक्षजयस्वाहा॥ इत्यक्षजमनु॥ ॥ पुं जा ससाधर्ग ईकटकवचावशिर्हस्वाहा
स्मृति संवाधर्ग ईधर्म प्रविचयवाधर्ग वीर्यवाधर्ग प्रीति संवाधर्ग प्रहादिवाधर्ग चा म्बु कलहाकाय
व॥ मर्गितगाथा पठप॥ यन्मर्गैस्तेन वदुन श्रवताहियक॥ ग्वनभूकलिहा पाशिवदधन नपुवद जाग
वज्रया अधिपतिया पुजन सहित नमन भूकलाय सगतया सगतया सगति इर्गति इय नपुथम
गति मे गलक न उतिम गलथरुत॥ महासूत्र संविदाकलं थमप नमकृति यकवियानख॥ प॥ शुप
हानपूजास्तुति॥ अग्निहोत्रीयजातकर्म क्रियाविधिः॥ ० ॥ सहृदयधामि पूर्व वीजका नाम माता
पुनक नक जममृहोनिश्च जम्पुमात्मा दुर्गभूतकलिहा गुंविन्यभादिमूर्द्धि विहृत्तदयमन्त्री ग्रण
ममार्क जहा॥ सहृदयधाय सर्वतारुद चकधाय गधिं म्बुधायसा॥ दीपायथा गृहणात् उदात्तयति स

वीर्ग ॥ तथैवं सर्वदा रुद्रचक्रं प्रोक्ता कदीपकः ॥ कसमन इत्यथा ॥ आह त्वमान ॥ थिंश्व सर्वकारुद्रचक्रं
प्रोक्ता कसं च जलाक ॥ थिंश्व त्रेधा यामागा ॥ सर्वकारुद्रचक्रं कुरुलं ॥ १५ ॥ सर्वकारुद्रचक्रं ससायावनाममा
सायावनामक्य ॥ रुद्रधनं वलाहानं वदवा नामाकवा ॥ कन्यायाव ॥ खवलाहानं जपयाहाव ॥ दव
याधिजमन ॥ कृपापत्रगवानं जपनय ॥ १६ ॥ नमचक्रं चक्र कलशकायावस्तानयाय ॥ १७ ॥ मच
नत्रवजधर्ममवदवदी ॥ मुद्रागधनसहितस्य विपश्चि ॥ कसम ॥ नमचक्रं चक्र कलशकायावस्तानयाय ॥ १८ ॥
नमर्गलं रुद्रवदुर्गपनमारिष्यकः ॥ १९ ॥ य ॥ मलादि ॥ कसम ॥ नमचक्रं चक्र कलशकायावस्तानयाय ॥ २० ॥
॥ २१ ॥ पुननसहितं ॥ थुनचमुद्रागधनं सहितं ॥ २२ ॥ नयामयसविष्णुक ॥ विपश्चि ॥ नमचक्रं चक्र कलशकायावस्तानयाय ॥ २३ ॥
वसेन ॥ २४ ॥ खगतिविनामयाकल ॥ २५ ॥ ममतिमंगनरुद्रातिमर्गलथरुद्र ॥ २६ ॥ नमचक्रं चक्र कलशकायावस्तानयाय ॥ २७ ॥
या ॥ नमचक्रं चक्र कलशकायावस्तानयाय ॥ २८ ॥ पक्षपवा ॥ नमचक्रं चक्र कलशकायावस्तानयाय ॥ २९ ॥
याव ॥ वदवा ॥ नामाकवा ॥ कन्यायाव ॥ खवलाहानं जपयाहाव ॥ दवयाधिजमन ॥ ३० ॥ रुद्रमुद्रावतानाममाकन ॥ ३१ ॥
॥ ३२ ॥ नमचक्रं चक्र कलशकायावस्तानयाय ॥ ३३ ॥ ममतिमंगनरुद्रातिमर्गलथरुद्र ॥ ३४ ॥ नमचक्रं चक्र कलशकायावस्तानयाय ॥ ३५ ॥
पक्षधिन ॥ ३६ ॥ नमचक्रं चक्र कलशकायावस्तानयाय ॥ ३७ ॥ पक्षधिन ॥ ३८ ॥ नमचक्रं चक्र कलशकायावस्तानयाय ॥ ३९ ॥
लघानमनयाचक ॥ श्रीवद ॥ यक ॥ नमचक्रं चक्र कलशकायावस्तानयाय ॥ ४० ॥

[illegible]

भाययहा इमिकसय ॥ धर्मिकासमकु ॥ ॥ गोपिकमृनिपुर्णवपुत्रकप ॥ सटाचलनीतिलतादिम
 च ॥ गंगयतालजविमृमयपूरुहा ॥ १५ ॥ कालानुचरुलकातविधिविधय ॥ ॥ नानाजातिङ्गम
 नानाअधितपठिनानाबुद्धिरिक्तनकल्याकवस्तुपुष्पासंज्ञन ॥ अतदाहाजपनजंख ॥ अतनुममानि
 स्थितं ॥ १६ ॥ अलक्ष्माकच ॥ सूर्यपावनगडना ॥ १७ ॥ पिताजनकमाल ॥ समाकाजवलय ॥ अननुप
 नंदाहजपज्ञा ॥ वस्तुतिसाजादिपंदाहाजपज्ञा ॥ ॥ नेत्रकलाजमभुक्तकेटिठिठिकानि ॥ आदिस्वक
 कुरुलखकददधवाचनानंगतालमधुकासवीजपुत्रान ॥ नाशककलिकलकधकितादिस्मृ ॥ १८ ॥
 मोच ॥ अम्य ॥ वाक्य ॥ मधुकास ॥ कृष्णजनु ॥ धन ॥ कनस ॥ लेखस ॥ कवलवस ॥ कतानिनु ॥ नानायसा ॥
 ताय ॥ गंगय ॥ वेकालस ॥ वयजस ॥ तवस ॥ नाजिकन ॥ हजनु ॥ अम्वज ॥ चहजनु ॥ पाल ॥ कसूजी ॥ १९ ॥
 पुजा ॥ ॥ आवड ॥ दर्शनसमाधिरुलसर्वजिनपुत्रपुपीननखाहा ॥ ० ॥ ॥ धर्मिकलजासन ॥ १ ॥
 जपनमाकनमूर्तिदवताखडाव ॥ आकाजपनमनलववनकाहामृनिजनयाजोग्य ॥ नाजिका
 जज्ञसने ॥ समस्तमृनिजनयापुत्रदवतानपतिपालयाकहावलपं ॥ पासियाह ॥ पजहदहावजपं
 नकाजवीजाकनेशले ॥ अनवस्तुयाह ॥ १ ॥ पुंकाजपनमाकनमूर्ति ॥ उथजपंसमूर्ति ॥ इवखन ॥ स
 पतिनदाहजपज्ञा ॥ ॥ नानाकलाध्वजसचमनादिपुजा ॥ मृत्पानिवद्यसकलासमहार्थकामा

वीनासकादिपनिमहिषककुक्कुट ॥ पाषाणनृपमनिहममयादिपाद ॥ स्नानद्याय ॥ उक्तायाय ॥ पा
दार्घ्याय ॥ नासिचक ॥ पूजामनु ॥ वाक्पाजय ॥ पनिजडविय ॥ गिसाविय ॥ लाहाडाहाले ॥ २५ सागानव
धनमजागयशला ॥ २६ ॥ अथ नमो दधिविषमयाविकानं सवजनपञ्चनसपनसपकार्ज ॥ २७ ॥ मधुमधु
निविधिनिर्मितलायुकादि संप्रामयचविधिनायनि ॥ २८ ॥ धानं ॥ नायुकजा धलसारवल धलि नागामय
पुचान वजन ॥ २९ ॥ आद्योक्तिकानि नमस्कृतानि नमोभ्यानि ॥ नमोमधुनानि ॥ वंजनादीनदत्ता ॥ आ
लिकानिदशात ॥ नमो घृतसपञ्च विविधमस्यमासपुकाजानिखाद्यादिनिविधिनचपिष्टपूपक
लकुकादिकनिकत्वाप्रथमकेकपिष्टं नवकायनृकमनाहस्यमयजलनामूलकसुमसमन्वितं
दशात ॥ जनकाशामनायुकजा कगा रवायुपञ्चादिन ॥ पात्रचपिपाइवने स्वात घन सारवल
डागा सम ॥ लहुवासहितनेदाहनपशना ॥ ३० ॥ नमः समकब्रह्मनाडागावनन्ददस्वाहा ॥ ३१ ॥ उक्ता
नपनमाकनमृत्तिनमस्काजयासं महाकफसमईकुक्षिनिनजलनपुष्टव रगवान्ब्रह्मयावल
विसं स्वाहाभयप्रथकपुकासमाननेभुयगाहानशुगतिनञ्जनाचकं झायानंमायाचक्रं शुगति
दवेदं दशादनसवाननेनागादाहानपाभयशना ॥ ३२ ॥ उक्ताः ॥ उक्ता नकायाधिसुत ॥ आकाजवाग
धिन ॥ उक्ता नचिडाधिसुत ॥ ३३ ॥ स्वगा एकलालितुनन एकलालिभयशिकाय उजाचकं जाहान

नेकननं वरुणनरुडिमयास्पवचननेखमहासं विरुमनमतसं वकागुमनने अलरुकनपूरावनप
 रना ॥ दिव्याननपीननलाहा ॥ ॥ कुंकाजपजमाकनमूर्ति याधनयागताज्ञानामृततागनपस
 सपीठलपं कुंकाजपूरावरुडरुजा ॥ ॥ यननडाकयत ॥ धनक्षसोदाहलप्यरुजा ॥ ॥ मिन्ननजासन
 विधि ॥ पकम्पुपनयनविधिक्रिया ॥ ॥ गगाकलआलिखक ॥ धनपश्चिममचाड पप्रचक्रकल
 नं पंचामृत यकाकायावलपनयाय ॥ यमंगलंकमलपासिसवदगीरुं चक्रायुधपवनरायसंरु
 तस्य ॥ लाकंधनस्यसुगतस्यसुखात्मकस्यतमगीलंरुवहृगपजमारिखक ॥ कलआलिखकवियाव
 यनगमनेयु पलस्वानकड वडचक्रपृथि ॥ धिचिद्रुहडप्यमपुजननसहितनं ॥ अमृगोरुतथागतस
 समललाकयाधकृज सप्रमल उडमगति सुखावति रुवनलाकधुसलाकसमसं माकृविवलं
 धसमेतिमगीलकुल डातिमगीलथरुल ॥ गमनयुलाकंधनभय अमृगोरुवहृरुं जानिकस अतिर्य
 कजातडानरुजा ॥ ॥ कुं वडीरुतनुपनिर्मितमहातिपुक्रुजधनयाद्रुमोधावनधपुवहृरुटिला
 नससुताय्यमुडया ॥ धनाकाजस्वपरावितिधियाचुडाकतिकल्पये ॥ कर्त्तधर्मविवहृपापप
 टलानेसंवक्षसेवायेत ॥ कुंकाजपजमाकनमूर्ति अतयमहाकाक ॥ वडस्वप आहानयाडागी
 पुनवकाजवधनधं धानध आदिसककृष्णजीन जमे वुमकुलसवसनं सडवहृरुजं ॥ जमनाजा

यत्सुद संस्कारादिः शुभं ॥ मन्त्राणां सत्त्वविद्वान् बुद्धिज्ञानातिबुद्धिज्ञान ॥ शुभं कायानवभूतयमः ॥ मा
मववभूतयमः संस्काराजिक्रिया चूकनधयाज्ञान प्रविष्टायाज्ञान नजन्मज्ञानं मकुंज्यामउच्चाजयानध
याज्ञान विधनविहृजा बुद्धिज्ञाननतवजाज्ञानवभूतज्ञानिज्ञाना ॥ अथसुदुमज्ञाना ॥ ज्वरलक्षयः अन्यायी अ
नमी पापवाधनपुः शुभं स्वरावभाजनाव ॥ कर्मस्वरावभावनपयातः शुभं कक्षा संख्यायज्ञाना ॥ नमः शील
धर्मवाधनपुयकयातने हानमूर्तिस्वपश्ययातने धर्मज्ञानतत्त्वज्ञानयातने मुत्तनद्रुसपुटनज्ञाना ॥
॥ नानाजन्मविचित्रहममबुटाकेष्टवत्सादृश ॥ नागशाकगवोचूकलृल्लोधागलितकंक ॥ मु
काहाने लोमिकक्षवलकयुजसिंहानने वचनानि किंकिकवननवासन्मखलान्पुनं ॥ तलगाज
तज्ञानि अनकम सुदजलं मदकक्षातनधनिकाजादिने ॥ काहाल्पमान नानाज्ञानतनध चानु
सुदजद्रुसमः इविनमाला मुनि लक्ष्मी ॥ कयुजशिखल नापुन दुर्गमच्छायवस्तुकटिहानवि
रयिता अहंज्ञानकृगव जातनध धुगंजातनधनियकज्ञाना ॥ ॥ शुंमर्गवनधवानानकुदयज्ञानवा
ज्ञान ॥ चूकलृल्लोधागलितकंक ॥ शुंकाजमकुसहितन कलिमलधयलाकस्वजावयायपाप अनमी अन्यायी
मूढात्मापापवर्तस्वहृजपयात सुविधिलयाय मोडुय थैस्वधहाखानन शुभं कक्षा संख्याय
ज्ञाना ॥ ॥ स्नाहधयनिकुप महासागीज्ञाना ॥ अगिज्ञानास्य वतामूर्तिचूकाममिधननपयात

नचशकनसंखायज्ञा ॥ ॐ धर्मो रक्षति रक्षितः ॥ धर्मो रक्षति रक्षितः ॥ धर्मो रक्षति रक्षितः ॥
रखनज्ञा ॥ धर्मो रक्षति रक्षितः ॥ धर्मो रक्षति रक्षितः ॥ धर्मो रक्षति रक्षितः ॥
स्नान ॥ यन्मर्गं लंघयति तस्य जिनपुत्रं नमस्कृतुं न च वनवासं न स्नानं ॥ श्रीनलसंरुवजिनस्य नि
रुवजिनस्य नमर्गं लंघयति ॥ कुरु नंत वाय ॥ यत्तु गानधूमनि जलद्वयवस्तुधननपेविष्ठाक ॥ जिनपुत्र
नजलनं देयातिथिग्वे जलसंरुववृद्धानघातिनं जलध्वलाध्वं सक्तुधाय स्यासितं गजवनं जल
यामयुं नक्षत्रं नपत्वं गजध्वके गतिग्वे गजगृधसहितं श्रीनलसंरुवमवजपाव ॥ सग्वति म
र्गं लंघयति मर्गं लंघयति ॥ दवनातिथिकक्षय दवपदपुसिहया नतिथिक जातज्ञान ॥ धनमकु
रुनपुयके ॥ ॐ दंत सर्ववृद्धा नातिथिकुके नमस्कृतं ॥ युष्माकं पूजनार्थं यमकुरपञ्चक जादवं ॥ ॐ दं
धवस्तु समस्तवृद्धयातिथिकुक्षयनादविन्दक संस्कृतं ॥ जा ॥ ध्वतिथिकुसमस्तयासि नमः ॥ वहनपेविष्ठा
कत्वं ॥ नमस्का नयाडतवख ॥ युष्माकं कुलपालसकनसपूजायाय यागध्वमकुरपञ्चकुलउरवज्ञं ॥
ॐ सर्ववृद्धमकुरातिथिक समयधियै स्वाहा ॥ ॐ काजपनमाकनमूर्ति समस्तवृद्धयातिथिक
श्री ॥ नपुशगतिरुका नक्षय ॥ गजकंठवदपकि कायी ॥ वक्तुमत्वरुवदिन्दु मर्दुवे नाचनसुध
नखानलाधिप ॥ वहकान ॥ मृगपुत ॥ उका नमाघसिहिसु हात्वापञ्चजिनात्मक ॥ रुका नक्षयसि

हाथमकूटपकमूमै॥ ॥ वडसलक्षयज्जन्मानविदुः प्रप॥ ॥ अहंकारयज्जन्मानविदुः प्रप॥ ॥ वेजावन
मूर्तिजन्मानयनादप्रपथवडचाड॥ जलसमवहकाजक्षयज्जन्मानविदुः प्रप॥ ॥ उकाजक्षयज्जन्मानविदुः प्रप॥ ॥
काजक्षयज्जन्मानविदुः प्रप॥ ॥ पक्षवडमकूट उडमचूजमक्षिपसिद्धिस्वभावसवज्ञेनविद्वान्ज्ञाचार्यक्षय॥ पक्ष
जन्मीउद्वहानउथनपं॥ महासुखचक्रसवहलपविष्ठाकश्लं॥ स्वाहाध्वनिश्चयख॥ ॥ ॐ स्वाध्यायं वन
धर॥ ॥ ॐ स्वाहा॥ ॐ कानयनमाकनमूर्ति॥ वाक्ष्यं य॥ ॐ नृजामैम्पक्षेवाधिज्ञानतं॥ ॐ नृप
हन॥ ॐ कानमृदानकवचयाडविष्ठाकश्लं॥ ॥ ॐ तिस्रश्चिन्मकेनधविधि॥ ॐ ॥ ॐ तत्कलक्ष
रिषक॥ ॐ निर्यास॥ ककीस्वानयाचकनसृगन्धतेल॥ कलक्षयाचक्र॥ ॐ कान॥ वायव्यमचाड॥ कलक्ष
नैस्वानयाय॥ मैत्रयनाथप्रमुखवनवाधिसत्वेर्यत्कीर्तिर्देदिविहानविष्णुहसत्त्व॥ निष्ठावदाय
तिमिजापहनंजनातां॥ तन्मर्गलंरवकुक्षककनंरवाय॥ मैत्रयप्रमुखनं॥ समस्तवाधिसत्त्वस॥ सूकी
र्तिमैत्रिविहान॥ कनक्षविहान॥ मुदिताविहान॥ उपकाविहान॥ ॐ नृचकुवृक्षविहान॥ ॐ वनप्र
वाधिसत्त्वजनया॥ समस्तदायनिः॥ ॐ ययाडनभाचक्रुतिमिलाधया॥ विद्वत्कपूस्पंचाड॥ चतकनकं
माचक्रुहानक्षय॥ ॐ नृजानाह॥ त्यमानयाकत्वं॥ ॐ सग्वतिमंगलश्ल॥ शक्तिमर्गेनथश्ल॥ प
क्षमहानपूजास्तुति॥ स्वहृदयजगिर्विष्णु॥ दवताचान्चिद्रं॥ कूलिधामैक्षिस्तुचिद्रं॥ पप्रखक्षय

1961

[illegible]

एकमूर्तिनेरुल्लसपु. एकमूर्तिसंईविहृतावनपं. विश्वत्रयखडाशपूजायायशुभा. ॥ वाधिविहृताः
 सर्वं वृद्धाशुभगतामता. वाधिसत्तामहासत्ता. खड्गिण्याश्चरुमिनः. निःस्वरावा निजाजसं. सर्वसत्त्व
 ककाजर्थ. तथागतसमताहानेवाधिविहृतिस्मृती. ॥ वाधिविहृतासर्वधाय. अनुराजाहानयागे
 ता. तसंज्ञकसमस्तलोकवृत्तान्थ. सर्वमायात्रयप्रणिहृदवतामूर्ति. उपउहवज्ञने वृद्धाशुभगताम
 ताधाय. त्रिकायवदतो. कायवद. वाकवद. चिह्नवद. उहवज्ञने. समस्तवाधिसत्त्वना. खड्गिण्याधाय
 संसाजज्ञ. मकुडपाववाधिसत्त्वज्ञानमभवजपाशुभा. निःस्वरावधाय. वाधिविहृतालडाव. सर्वसत्त्व
 धाय. एकीतावज्ञलडाव. वाधिसत्त्वमज्ञलै. तत्त्वसंसिद्धिसंईविजडाव. वाधिविहृतालं. ॥ धर्म
 धनुगर्तस्वाहा. ॥ कुंकाजपजमाकजमूर्तिस्वत्रयज्ञलै. भवजपाव. धर्मधनुधाय. गृहमधुनकाया
 वास. गर्तस्वाहाधाय. कुंकाजगर्तगृहास. वाससत्त्वसलप्यनिश्चयख. ॥ थनेपस्वापहाजपूजा. ॥ वृत्ति
 अष्टमसमावर्तनक्रियाविधिः. ॥ ३६. ॥ साधाय. लिमिनिनेकायक. ॥ जिजायस्तनजत्रवानप्यन. ॥
 मासकलक. तावनायाय. कालचकननंवायस्ततावन. ॥ तथापाधिगृहधसमय. स्नानमधुल. कलध
 तिधकक. ॥ वडलाणाचक्र. कलधसशका. अमलहामलतलपनयाय. कलधनेस्नानयाय. ॥ यद्व
 ताभवजमात्सगीतनृथ. यत्पुष्पधूपवजदीपविचित्रगान्ध. ॥ पूजातिनेप्रतिसमंविमलंप्रगीत.

सुखगतीरुचुनपत्रमाहियकः ॥ ॥ अग्निकाशमचाडलाध्वनकलधौ ॥ ॥ लाध्वनध्वनितिलास मात्ता
ध्वनितिलास जल गीताध्वन म नृध्वन स्या ॥ अनसुखानध्वनपदीप ॥ विचित्रगन्धे ॥ नानागुणितिकाडा न
माकनेध्वन सहितनेहडावविष्काक पूजादवीनर्मगलमध्वनसहितनेपडयावविष्काक ॥ ॥ संखतिमैग
लकलडातिमैगलध्वनल ॥ लाध्वनदिकलध्वनितिकलानयाडानख ॥ ॥ स्वमानसाध्वन नृध्वन नृध्वन
सचिद्रवीजाक न जन्मनिर्मिते ॥ दयान नृगध्वनगठ ॥ पुनरुच्यकुलान नृध्वनपुतिमोगकनका ॥ विहा
यविष्कार्यसुखसुखमिध्वनितियध्वनिसुखसुखिवा मपार्थक ॥ विवाहयुक्ता सुविधसुजा नृचि विध
यपाध्वनगठध्वनकुमकुविह ॥ ॥ स्वमानसाध्वन नृध्वन म नसापत्रम चतुसध्वनलध्वन ध्वनितेन स
नामागुणकान अधिकलधिकखंड ध्वनितनृध्वनय ॥ चतुसध्वनलस सचिद्रवीजाक न निर्मितध्वन
य ॥ ध्वनध्वनसुखवध्वनजल ॥ अस्तु ध्वनसहितने वीजाक न ध्वन समृद्धिध्वनियव गध्वनध्वननिविह
आचार्ययादयोक्रमानवीजकिसुखव नानागुणवध्वनाननृगुणितेन दवमृद्धिध्वनलवन धौलचय
ध्वनक्रिया कन्यादवीध्वनव ॥ ॥ विहायविष्कार्यसुखसुखमिध्वनय ॥ ध्वनयुगुणितिलावनानरुलपु
सुखसुखमिध्वनय ध्वनानमृगध्वन आत्मासुखलनपु ॥ निखायविष्कार्यसुखसुखमिध्वनय ॥ दवदवीध्वनव
मकुललोमै सगपनयन कलयाडानख ॥ विवाहयुक्ता सुविधसुजा नृचिध्वनय ॥ ध्वनध्वनलवध्वन

तिसयाव पुक्रियाविधिरुक् ॥ संसाजयापजिपातिनेविधिथंयायख ॥ ७५ ॥ नयग्रुतिने खनवलस पाक्षिग
 हभमृदायाय ॥ लाहातिससपत्राय ॥ अतासवित्कलसहितयाडाव ॥ इडभजहायके हानगथापठये प्रति
 स्थायायइजा ॥ ७६ ॥ येसासर्ववृहानी हानाताकपराकनी ॥ गृहीतापाक्षिनांपाक्षिवृद्धकृपप्रवर्तय ॥ य
 नसथनसंहाने पुक्षापात्ममधुल ॥ ननसथनमनाथं कामास्त्वपजिपूजय ॥ ७७ ॥ येसासर्ववृहानीभय
 थनस्वरावमृदाभय ॥ समस्तवृद्धयाकलभय ॥ हानाताकपराकनीभय ॥ हानदीपयाकातान ॥ हनुस्वराव
 ख वित्कलडा ॥ अताडाइगृतिमृदावन्धवियाख ॥ गृहीतापाक्षिनांपाक्षिभय ॥ जाहातिसवित्कलसम
 खभजहायके कृषाखलविधातनेसमीतयाख ॥ वृद्धहानकताभयइजा ॥ यनसथनसंहाने पुक्षापाया
 त्समधुल ॥ ननसथनमनाथं कामास्त्वपजिपूजय ॥ ७८ ॥ नयग्रुद्धयाहान उडमस्वरावस्तिपूजय
 समायुकि ॥ नृदयेदालिगधहनुख ॥ ७९ ॥ उडममृदानमनसापूजीइजा ॥ ८० ॥ येसासर्ववृहानी
 स्वाहा ॥ माताकिनीकाय ॥ ८१ ॥ वडाथाउमस्वजसुगहागंठादज्जनयकिमालाविहृदस्वाहा ॥ ८२ ॥ येसासर्ववृहानी
 प्रवडसन्पडकीयमकूट ॥ ननसिद्धिस्ववर्द्धादिकुटी ॥ अकाजजंअवधुतिस्वरावदहं ॥ ८३ ॥ येसासर्ववृहानी
 गिंठा ॥ आठीनिवहाविंठास्यदली ॥ वृद्धहानामृत्स्वजपंधर्मधत्वकिने ॥ सर्वतापापहानिर्धे समयस
 चंविताय ॥ नत्समैहानसत्वरुदीअकि नभानिने ॥ नशानुताय ॥ अकाजवीजाऊजअवधुतिभय ॥

[illegible]

माजाख नक्रुदवतासर्व समस्तदवनेनक्रायामालाख ॥ किष्पग्निरुलवायव ॥ पृथिवी. अग्नी संख व
 यु. ॥ दवतानेनक्रायामाजाख ॥ यावत्संज समजुपर्वटस. दवलाकदक वहनेपताज थुतदवतापु
 तिमात वहनपमालाख ॥ यावद्दुक्कामहीतल. पृथिवीसगज्ञानवहनपताज. वहनपमालाख ॥ च
 न्दार्क. चन्द्रसूर्यसाकाशसवहलपताल ॥ वहनपमालाख ॥ निधुययाड. थीजाहवथीनइयमाजा
 ख ॥ ॥ स्नानकलषापीतवइ. चनदातया ॥ थुकुलषाकायावक्रुहिसर्क ॥ ॥ यतग्वेनयुयामर्गसइ
 ल हिनसमस्तयाकपनमतवयाड. पवित्रयाक पुनार्थयाक ॥ क्रियाकनभथेयाक ॥ इनसर्वलो
 कयक्ति. इगसंसाज समस्तयाकेति. ॥ ययाडख. थथिंयप्रधवानभक्तमृतिपनमध्वनया ॥ ग
 तिमर्गलइले. इतिमर्गलथइल. ॥ पनमारिषक जातडानख ॥ प्रतिसुतानोदवाती. पूर्णतावकि
 कर्मध ॥ विधयाकल्यतकाकविधाननमहात्मनि ॥ ॥ दवयाप्रतिष्ठाइली. यहूपूर्णन. तनुसपि
 कास्य. विधानमालकमहान्महान. पुजाधसपिकास्य. ॥ गतकितातथगतपवचनस ॥ गथागतस
 वचननसहामविधिइना ॥ ॥ यह ॥ नृजिमृत्वाहिवेदवा. हामतत्ववावस्थिता ॥ हामनपीक्षिता
 दवा. प्रीक्षितासिद्धिदकिन ॥ दवयाक्रु. तावजप. क्रुतिहामतत्वसंज्ञायाख. दवताक. कामराग
 नायइन ॥ ॥ कामरागइलडाव. सिद्धिइलइयुख ॥ विनाहामनसैसिद्धि. ॥ सर्वकर्मसंज्ञायन ॥ स

चमकुप्रसिद्धार्थः ॥ हामकर्मसमाचरन् ॥ हामविन्नसिद्धिमह समस्त कर्मसंयह नसिद्धिरुत्तं ॥ समस्तम
कृत्यासिद्धिवनं यहनख ॥ ननिमिद्धिनंयह नानयायशुना ॥ ॥ ननिमिद्धानमविज्ञाययहुहाम
प्रकल्पय ॥ ॥ नगदत्तनमस्तानं नचकर्मकलेतव ॥ ॥ अकिप्रसिद्धिअकृष्टि विद्वथाज्ञानादिष्ट ॥ हा
मकर्मोत्तमान ॥ सर्वकृत्याद्यथादितं ॥ ॥ ननिमिद्धमसंयहयाकाज ॥ अधनयाडागलिवस्तु ॥ ॥
धनमस्तुलं कुलसंस्तानमस्तुलं काकर्मकलमस्तुलं ॥ अकिप्रसिद्धमस्तुलं वध्वथवयायवस्तुथवमस्तु
लं ॥ अह नमस्तुमानयायमानयायमानमस्तुलं ॥ उच्चातनपंनकियाक उच्चातनमस्तुलं ग
वहातापुत्र्यथंयहयायशुना सर्वद्विष्टलशने ॥ ॥ धर्मधनुषजावृद्धि प्रहापानमिगाहव ॥ सर्व
ताथगतान धातिपुत्रमिवानल ॥ धर्मधनुषजावृद्धिदधकिनेधस्वास्थ्यसमास्वास्थ्य ॥ ॥
नज्ञानगम्यं ॥ अज्ञानधायमृत्तिवाय कातिवाय पजिचयाव अधउद्धाजनस्य तिवृजिनखास्य
यहसात्तादयकायाप्रधस्तुलं ॥ प्रहापानमिगाहानपानगंतुप्रहावकशयुवरव ॥ सर्वतथागतानधाति
पुत्रमिवानलधाय हामधातिमानया उतंजवकनकावयाप्रध ॥ सर्वह तथागतानस्तुधस्तुधिवरव
॥ ॥ धृतिकनेहसस्तानं कुलगहविवर्धनं ॥ मोर्यादिकुलनेकाष्ट सर्वजकाकनेकुल ॥ ॥ धृतिक
नेहस्तानधाय ह मि ॥ अधनयाडाप्रधने ननकरमितार ॥ थलिवरव ॥ कुलगहविवर्धितधाय ॥

अजिह्व दयकायापुष्पने अनक गृहमहिज नानाविध विविध कूट कुंठ गंगादि चकण जापर्यं कै ॥ २५ ॥
 तिवख ॥ सोयादिक कर्णैकाष्टं भय सिगाक अनक अष्टादशसि दयकायापुष्प महाकृ जपजाक मध्वलिव
 सजवमदवशातिरुयिवख ॥ सर्वानकाक नैक भय कृष्णयापुष्प नकाश्रयिवख ॥ अजिह्व सितमि
 द्वार्थ पुष्टि कुरु न जा मतः ॥ सर्वसम्यक् कुरु सप्यि समिह्रुजाविवर्द्धिका ॥ अजिह्व सितमि द्वार्थ
 भय ॥ कीकाइयाया पुष्पदवता अजिह्व सुख ॥ थम अजिह्व सुख ॥ सुखकल रुयिवख ॥ पुष्टि कुरु न जा
 मतः ॥ भय पुवाकइयाया सजिनस सपथ रुयिवख ॥ सपासि रुयिव ॥ ययासस सुवृद्धि रुयिव याडाकार्य
 ससा न रुयिव ॥ पुष्टि भय थग कल रुयिव ॥ सर्वसम्यक् कुरु सप्यि भय धलदायान समस सम्यक् रुयि
 व ॥ समिह्रुजाविवर्द्धिका भय समिध नाना जालका नहाम विधिदायान महाकृ जवकं ॥ अक नैख रुतम
 रुव ॥ ॥ गिलपापह नै ॥ भया भयार्थ कर्षे ॥ महावलक नै मास अद्विव गप्रदाजव ॥ गिलपापह
 न भय ॥ हामलदायान समस पापह न रुयिव ॥ भय कर्षे भय वादायान अनक रुष्य न इव धलिव
 महावलक नै मास भय मासदायान वलवक रुयिव ॥ अद्विव गप्रदायव भय महा अद्वि सम्यक् रुयिव
 गन डाय रुयु ल्हाय रुयु ॥ ॥ नापुवृद्धि कर्णै इर्वा ॥ गधुमा जागता अक ॥ प्रहापद मधुकी न ध दभ
 नै सर्व सोखदी ॥ ॥ नापुवृद्धि कर्णै इर्वा भय मरुइयान ॥ नापुदय ॥ गधुमा जागता अक भय रुदा

यान जागकसुहजभरुयु॥ प्रहापदमधुकीनेभय चाकदायान प्रहावकशयु॥ दध नसर्वसोखदभय
दधिगुजनइयान समसुसखपदार्थ जायुख॥ ॥ ६६ ॥ सार्थसिद्धिदावकि मुक्तिदाखसुदवगा॥ ॥ ७७ ॥ कर्मा
नृपक्षरुयैभान्यादिकर्मरुत॥ ६६ ॥ सार्थसिद्धिदावकिभय रथउरुमपनउकाल चवल नानावसुस्वानदाया
न उरुमसिद्धि रूलरुयुख॥ मुक्तिदाखसुदवगाभय ६६ सुदवगाभय न नृभयनमुक्तिभाकविपुवख॥ ॥ ७७ ॥
कर्मानृपनभय ॥ ७७ ॥ प्रथमपदयया नृनृपन भानिपुष्टि रूल विविवख॥ ६६ ॥ यैभान्यादिकर्मरुत
भय भानिपुष्टादिसर्वभुत रूल जायुख॥ ॥ पाद्रीपुष्टाभनापाय न रथषादयरावना ॥ नगाविनिर्ग
नैसर्पिमहाहानामृगैमर्ग ॥ ॥ पाद्रीपुष्टाभनापायभय पाद्रीदवीभय ॥ ७७ ॥ वादवभय नरुषाऽदय
रावनाभय ॥ ७७ ॥ नगाभदयरावह दालिगनरुगुनिसय ॥ ७७ ॥ कामेता गतासागवभय ॥ नगाविनिर्ग
सर्पिभय ॥ ७७ ॥ नगाभनृवापायया अत्रुगुनिरावधवसुमहाहानामृगनम ता गताखरावभय॥ ॥
नृनमैरुपयदेवान आत्मानैसच नाचनै ॥ ७७ ॥ पूर्वैकजागियाहामै सिद्धि मोलागभ सम्यदं ॥ ७७ ॥ प्रकाजर्षी
सकपिर्नमैगायशले दवगासमसु सपनिवानै ॥ समसि इचनपिचन ॥ ७७ ॥ प्रकाजर्षी हामकर्मया
यीवशना ॥ ७७ ॥ गवनपुपुनृयधैसिद्धि नै मोलागभ निकुसुन्दनरूलनां सम्यदिरुयुख॥ ॥ त्रिमफेकवि
भानि यावन्त रुकाटिस ॥ ७७ ॥ स्वकासिहानृपन वसुतकादिसम्यगै ॥ त्रिमफेकविभान्यादि यावन्त

[illegible]

सर्वलोककृष्णमाध्याय ॥ वाकलचककृष्णमाध्यायवर्हः नृधायमूर्तिस्वरावपावकाग्निधाय आतिनृप
 नृमृगमासनसजीवजपविष्ठाकर्त्त॥ जहाहवाविष्ठापिनीप्रवासुजस्रधाय ॥ उकाजमृगपमासनस
 वमजपविष्ठाकर्त्त॥ नृकाजमृगमृगिदवताखनभाकपदप्रसिद्धरुजा ॥ आनेत्रिनृपनिचवजराकलाप
 यज्ञापवीतधितवस्तुवित्तिगी ॥ स्यात्तयाकपनिमधिरहस्युग्मवामप्रिसाखपनिमधुकमधु
 कमधुनृ ॥ आनेत्रिनृपययामृगटस्रस्रकलाधनजपविष्ठाकर्त्त॥ यज्ञापवीतयानोन
 काखास्येतायववस्तुनतिस्विष्ठाकर्त्तानाजलात्काननतिस्विष्ठाकर्त्त॥ स्यात्तयजवद्रुथुकानज
 पमालाहडखवद्रुथुकानकमधुल्लहडखवलिथुकानकवापायैहडथुनमृदिसम्पन्नजवपावका
 ग्नि ॥ आतिनृपत्वेसाहाभाकपृथक्काजापनरुल्लप्रभाकलागै ॥ ॥ कलानकाजकिनिमधुल
 थमाहन्तनामाग्निमतीववीतै ॥ पीताम्बजालीकतनन्दपानैदक्षककृष्णवज्रिन्तरी ॥ कालानकाल
 कालाकास्येतायवयादथासृथिवीमधुल्लसमाहन्तनामग्निगीवन० युवस्तुनानालैकाननति
 स्विजवद्रुथुकानवजदमृडाजवलिथुकानजपमालाखवलिथुनकवापायैखवद्रुथुकानकमधुल
 लाहडतिनृथथिग्वग्निदवताखनमृकिप्रसिद्ध ॥ ॥ लेखीवलाजाग्यसृष्टिकथश्री
 पीवजागसृजराप्रवहै ॥ यज्ञापवीतकृतशुद्धदहैसयुग्मेष्टामुखपूर्वचिह्नै ॥ लेखीरुलवि

[illegible]

[illegible]

परवडाव ॥ मन्त्र ॥ ॐ आहिताग्निवीजा जापनयाडा न
 मूर्तिप्रसिद्धि ॐ गजदिनातासविलासन स्वाहानिधयव ॥ १ ॥ अमृताक्षमहावद्विधाय अमृतसुपुनप्रियमन
 कन ॥ प्राचुगीवामहाशक्तं सत्त्वांगुहकानक ॥ अमृताक्षमहावद्विधाय अमृतसुपुनप्रियमन
 याडानै सद्दृष्टिवावतस्वर्ण ॥ मृदुनद्विलावमिराकहलंकडावचाडकपिजाजामसेकनभयमिथिवम
 विमित्रनाव ताहाक ॥ प्राचुगीवामहाशक्तं भय मायनगजनाजकाडतकिगकि सजखा स/अलाजाक
 सत्त्वांगुहकानकभय उगतसंसाजलाकसमसुवा अंगुहयाकल ॥ थथिग्वज्जमृताग्निनामकग्निद
 वता ममूर्तिशली ॥ ॥ मृदुनद्विलावमिराकहलंकडावचाडकपिजाजामसेकनभयमिथिवम
 काहली ॥ मृदुनद्विलावमिराकहलंकडावचाडकपिजाजामसेकनभयमिथिवम
 आपकाजाहात ॥ वृषसुगन्धिमालाचभय नखनजानानैकाखायाथ चाड अंगुकाकस गन्धिस
 हृदयकाल सवन्धियाडतयाव ॥ जलख काकानप्रजनकालतयाड वृषसुगन्धाय प्रचक्षुषकाह
 लीभय प्रचक्षुषीनपजाक्रमसाक्राग युमकमहध्वजसुपुनप्रियमन ॥ ॥ अ
 र्कमिसकपुष्पादि हव्यंकलादितंचयेत् ॥ खड्गवृक्षानधरकूरुध्वकर्मप्रदत ॥ ॥ स्वमिस अग्नि
 सवहनपु थथिग्ववहनपु तायतायभव जतजतभवलेतिस्वानर्थिग्ववर्धेथल अग्निदेवता

खलु वा न अग्निं कृणुत कर्मरुदया गया यथाग्र ॥ १ ॥ थथिं ग्व अग्निदेवता न सृष्टिं प्रसिद्धि विजन्तं
 तुं अमृताग्र यथाहा ॥ २ ॥ कुं का नमृर्त्तिं सहितं न अमृताग्निनाम अग्निदेवताया न सृष्टिं हा स्वाहा मनुष्य
 महासुखसंपत्तिं निश्चयस्व ॥ ३ ॥ य० नार्कया वक्रि नती वती कृः सवित्र नला हल चानुका य ॥ विवि
 क्षम्वनालं कत रूयिता गीः ॥ सनिका कृपाष्ठाक म१५ लूत न ॥ ॥ अग्निदेवता नमः ० अग्निनाम
 अग्निदेवता ॥ विविप्रपक्षवर्ष चानुमहासुन्दनसुख नानावसुनतिम्ये नानालं का नक्षेतिम्ये ॥ १ ॥
 ताके जन्तं ॥ अथ कगी वृका क प्या नवलवक पाष्ठावा क म१५ लूवा ह न्य ॥ थथिं ग्व अग्निदेवता नमः
 र्त्तिं विवर्त्तं ॥ ४ ॥ कुं का नमृत्तिं ० अग्निनाम अग्निदेवता या न न स
 थहा मनुष्य स्वाहा सुखलनिश्चयस्व ॥ ५ ॥ क यैक जानाम महायवकी तडि सुका ॥ कटदिफद ह
 कपाष्ठावकी रुद्रदधु कृष्टी न नास्थि माली कपिला हंकठा ॥ ६ ॥ कुं क यैक जाग्रत यथाहा ॥ ॥ क यैक जाना
 म महागवकी धाय चन्द्रम१५ लखलपृथ्वी विद्वजस्वानी लवर्ष म१५ लाका न उग्र क जास्व नृप अस्व
 १५ म१५ लाका न अक यस्व नृपमृर्त्तिं अग्निदेवता ॥ तडि सुका कटदिफद ह धाय थथिं ग्व अग्निनाम प्रष्ट
 विद्या नाज उग्रमृर्त्तिं स नृपदह ॥ कपाष्ठावकी रुद्रदधु धाय उवना क्रथु न अरुय मद्रा खवल क्रथु न
 वक्र ह म उवल क्रथु न कृवा पा वक्र ह खवला लिथु न कृ धा न ह क न नास्ति माली कपि हंकठा धाय

मनुष्याणां सत्त्वं कुरुते नित्यं विष्णुः ॥ संसिधिवः तपस्वाकं धर्माच्च जनिदवतायानं आदितिविय ॥ १ ॥
 कथाया जयन्ता ॥ १ ॥ कानपनमाज्ज नमूर्ति, सहितन ॥ सर्वपापरवधु नपभाचकत्वं ॥ १ ॥ कुर्यैकजागामि
 स्वपत्न्यं ॥ स्वाहान्नकुर्यस्वपत्न्यं निश्चयव ॥ ८ ॥ पञ्चजिनवर्षा ॥ १ ॥ विविदनीप ॥ १ ॥ हासवर्ष
 कृष्णमृगजिननिवधनर्ति ॥ १ ॥ तयावसानं कुरुतापध्वर्ष ॥ १ ॥ पञ्चगव्यागतयावर्ष ॥ १ ॥ स्वावतन पञ्चवर्ष
 कालानसम्पन्नथर्षि ॥ १ ॥ जनिदवता कालासाया कउलिने निवासया इविष्ठाकत्वं ॥ १ ॥ कुरामकुरुने अर्त
 काजर्षि ॥ १ ॥ कालाजाकत्वं ॥ १ ॥ धर्षि ॥ १ ॥ जनिदवताममूर्तिरुव ॥ १ ॥ वनवाककुरुमहदध्वर्षा नीविशानातिर्
 कसाममायुर्तं ॥ १ ॥ सद्यस्यस्यस्युर्तदध्वर्षा नीविष्ठास्यनेवितपमरुसूर्यो ॥ १ ॥ कवेजाकुरुत वनदमृदवि
 व स्ववदध्वकानकमध्वलदध्व ॥ १ ॥ कवलित्थकानकपदध्व स्ववलित्थकानकवापाग्रहध्व ॥ १ ॥ अथकवि
 समध्वलाकाज ॥ १ ॥ कालानसहितनवध्वसमध्वने कास्वाम्यस्वलाकाकध्व ॥ १ ॥ नातावर्षनेवमनेगिस्व पप्रमृदित
 सूर्यमध्वलसविष्ठाकत्वं ॥ १ ॥ धर्षि ॥ १ ॥ जनिदवतायानं आदितिवियान ॥ १ ॥ महाकापताजय स्वाहा ॥ १ ॥ का
 जमूर्ति महाकापसाग्निदेवतायानं महासकलमूर्ति प्रमिहि स्वाहानिश्चयव ॥ २ ॥ ॥ कवाग्निताकध्वनी
 प्रवध्व ॥ १ ॥ यदध्वनीलसर्वाङ्गयसि ॥ १ ॥ स्वधीकधी मकुमाली धिगमरुमावर्ष मृदास्ववध्व ॥ १ ॥ कुर्या
 जय स्वाहा ॥ १ ॥ ॥ कवाग्निताकध्वनी ममकलाकयातिर्नमहाप्रवध्व पञ्चकमध्वल प्रमृकलव

112811

[illegible]

नवनदम्डाविव ॥ अवलिथुलाहाननरुपमालाह ॥ खवक्रथुकानकमल्लह ॥ खवलिथुकानगि
दल्लह ॥ म्मरुनरुनखान ॥ थथिम्मुकुकाजपनमाक्रुनमूर्ति ॥ प्रमाहनाग्निनामयह जाहनि
याहानममल्ललाकमाहनयाहान ॥ माहनीसिद्धियाहानमाहानिधयख ॥ ११ ॥ पावकाग्नियाम्निक् १५
वानचाकलच ॥ १ ॥ माहन्दाग्नियाम्निक् १५ वानयकचक ॥ २ ॥ कामाग्नियाम्निक् १५ वानमूर्ति ॥ काज
॥ ३ ॥ आध्याग्नियाम्निक् १५ वानत्रिकाधमूर्तिचन्द्रवान ॥ ४ ॥ लाहिताग्नियाम्निक् १५ वानमूर्ति ॥ ५ ॥
मृताग्नियाम्निक् १५ वानख ॥ ६ ॥ अथजाग्नियाम्निक् १५ वाननलाकाजवान ॥ ७ ॥ कुर्यकजा
ग्नियाम्निक् १५ वानत्रिकाधवान ॥ ८ ॥ तापसाग्नियाम्निक् १५ वाननलाकाजवान ॥ ९ ॥ क
याग्नियाम्निक् १५ सनापात्रवान ॥ १० ॥ मनुजाग्नियाम्निक् १५ वानपुतापवान ॥ ११ ॥ प्रमाह
ग्नियाम्निक् १५ पत्रवान ॥ १२ ॥ १३ ॥ अग्निक् १५ लकुधमूर्तिक् १५ वानशना ॥ ० ॥ श्रीकाधनामया
कियवीनगकु सन्धिगतदहावलेर्जिनननने ॥ कृष्णयदहाविधाविगतप्रकारं सत्ताठायप्रसज
निहिस्साधनार्थ ॥ श्रीकाधनाग्नविजयाकयवीनगकुधाय समसदहाकाधयाजायायमाककपडा
ककपशानकविद्याककअचलतर्किनाग्नितलदहमहावलउर्ध्ववचमरुनाग्न ॥ १४ ॥ दहाकाधधाय
जाशाथगकाधनागात्रकसहहावविद्याकलवीनगनेयागकुसामुसकडदहावल ॥ अधिमूर्ति ॥ प्र

प्रतिमखा ॥ लावना ॥ कानि ॥ हावधमन प्रतिगत प्रसिधन प्रथ प्रतिपदि ॥ नदहावलक्षय ॥ १ ॥ अधिमूर्ति
 याभाकसाधनवल प्रतिमखायागवल लावनायागगीवल ॥ कानियाकसावल हावधवृद्धिवल धमधयावाधव
 ल प्रतिगतयाधर्मदहनावल प्रसिधनयाविशवल प्रथयादानवल प्रतिपदियाप्रतिपालवल ॥ नदहाव
 लक्षय समस्तकावजै गमसाकसिद्धिसाधनार्थयाकल ॥ नदहादहानियाकेर्म दहावल गथागतप्रसिद्धि
 कुली ॥ श्रीमत्समाजविजयादिभूमकुम्भकर्मप्रवधविधिनाथयसाजसग्र ॥ श्रीमत्समाजदयमहाकुम्भ
 नकुजाङ्ग ॥ द्याग्निहामविषयसगतमूर्क ॥ श्रीमत्समाजविजयादियुमकुम्भकाय ॥ केनकुम्भसाखागे
 नजानरुनकुथन गथामीनधमा ॥ नदहादहानियाकेर्म दहावल गथागतप्रसिद्धि
 गथामीनधमाय ॥ नदहामीनजपे ॥ नीनउक्तनपु यत्स्वधय मनुपदं समाधि मृदापनममूर्ति
 उप ॥ कर्मसाधनार्थ ॥ क्रियाकार्यसर्मसिद्धि ॥ श्रीमत्समाजदयनकुजाङ्गसाधनार्थ ॥ द्याग्निहामविधिवि
 ययवस्तुदयकपदार्थ ॥ हामविधि सम्वजादयनकुजाङ्गसाधनार्थ वानकाप्रसिद्धावति ॥ गवनपुथ
 नक्रियासाधनपु ॥ नपुनमन्धनश्रीमत्समाजदयनकुजाङ्गसाधनार्थ विद्वनिधयस ॥ श्रीपद्मसंनवमहा
 दयनकुजाङ्गपद्मपमप्रकृति कुलागी ॥ पुष्टादिकर्मसाधनजय नपसिद्धि ॥ लाकधनधवि
 कुनावरुधार्थसिद्धि ॥ श्रीपद्मसंनवमहादयधय नकुजाङ्गसाधनार्थ पद्मविश्वचक्रविश्वनल